__/__/____

Tender Heart School, Sector 33-B, Chandigarh.

Date - Class - V
Subject- Hindi Literature Page-1
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

पुस्तक – नवतरंग (भाग-5)
पाठ-11 जादुई इकन्नी

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

यह पाठ-11 'जादुई इकन्नी' कक्षा पाँचवी की हिन्दी साहित्य का है। यह पाठ आपको 15 नवंबर, 2021 को भेजा जाएगा।

बच्चो! आज हम इस पाठ में कामाक्षी शर्मा जी द्वारा लिखी गई कहानी जादुई इकन्नी पढ़ेंगे। पाठ पढ़ने से पहले हम पाठ में आए कठिन शब्दों को समझेंगे।

शब्द		अर्थ
1. लबादा	-	ढीला-ढाला कुरता
2. इकन्नी	-	छह पैसे
3. इनकार करना	-	मना करना
4. मौजूद	-	उपस्थित
5. बरकत	-	चीज़ की कमी न होना
6. प्रतिबिंब	-	परछाई
7. ज़रूरतमंद	-	जिसे ज़रूरत हो
8. आदेश	-	किसी काम को करने के लिए कहना

बच्चो! अब हम पाठ पढ़ेंगे एवं समझेंगे। यह सारी कहानी ताँगेवाले अब्दुल और उसके बेटे रशीद के इर्द-गिर्द घूमती है। ताँगेवाला अब्दुल पुरानी दिल्ली में ताँगा चलाता था। अब्दुल मेहनती और ईमानदार व्यक्ति था। उसे धन का लालच नहीं था। वह जो दिन-भर

Scanned with CamScanner

__/__/____

Date- Class- V
Subject- Hindi Literature Page-2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

में जो कमाता था, उसी में अपना गुज़ारा करता था।
एक बार अब्दुल बीमार पड़ गया। कुछ ही दिनों में उसके सारे पैसे खतम हो गए। दवाई के लिए भी पैसे खतम हो गए। यहाँ तक कि घोड़े की घास के लिए भी उसके पास पैसे न थे। हारकर उसने अपनी आँखों के तारे अर्थात् अपने प्यारे पुत्र रशीद को ताँगा चलाने के लिए कहा। रशीद ने अपने पिता की बात मानी और अगली सुबह ताँगा लेकर जाने लगा, तब अब्दुल ने रशीद को समझाया, "बेटा, सवारियों से इज़्ज़त से पेश आना; चढ़ाते-उतारते समय उन्हें सलाम करना; किसी साधु या फ़कीर से किराया मत लेना।"

रशीद एक बहुत समझदार बच्चा था। उसने अपने पिता की बातें गाँठ बाँध ली। एक दिन रशीद शाम को आखिरी सवारी उतारकर घर जाने लगा, तभी किसी ने अवाज़ दी।
अरे भाई, रुकना! हमें यमुना किनारे तक जाना है।
रशीद ने कहा, "सलाम बाबा! ज़रूर ले चलूँगा।"
फकीर को उसकी मंज़िल तक पहुँचाकर रशीद ने ताँगा रोक दिया। ताँगे से उतरकर फ़कीर ने अपने कुरते में हाथ डाला और इकन्नी रशीद की हथेली पर रख दी। वह मना ही करता रह गया परन्तु फकीर ने इकन्नी दी और चुपचाप वहाँ से चला गया।
रोज़ की तरह घर आकर रशीद ने सारे दिन की कमाई अपने पिता को दे दी। कुरते की जेब से फकीर की दी हुई इकन्नी भी पिता को

Scanned with CamScanner

_/_/_

Date- Class- V
Subject- Hindi Literature Page- 3
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

निकालकर दी और बोला, "एक फ़कीर ताँगे पर बैठे थे। मेरे बहुत इन्कार करने पर भी वे नहीं माने और इकन्नी देकर चले गए।"
अब्दुल ने बेटे की बात सुनकर कहा, "कोई बात नहीं, तू इसकी जलेबी खा लेना।"

बच्चो! आज हम यहीं तक पाठ पढ़ेंगे। आशा है आपको यह पाठ अच्छे से समझ आ गया होगा। अब मैं आपको अभ्यास के लिए कुछ प्रश्न दूँगी, जिनके उत्तर आप अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. प्रस्तुत पाठ के लेखक कौन हैं?
प्रश्न-2. अब्दुल ताँगा कहाँ चलाता था?
प्रश्न-3. अब्दुल के बेटे का क्या नाम था?
प्रश्न-4. फकीर ने रशीद को कितने पैसे दिए?
प्रश्न-5. "कोई बात नहीं, तू इसकी जलेबी खा लेना।" यह शब्द किसने-किससे कहे?

बच्चो! अब मैं आपको इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी।

उत्तर-1. कामाक्षी शर्मा
उत्तर-2. पुरानी दिल्ली में
उत्तर-3. रशीद
उत्तर-4 इकन्नी
उत्तर-5 अब्दुल ने रशीद से कहे।

गृहकार्य

- बच्चो आप इस पाठ के पृष्ठ- 88 पर आए शब्द-अर्थ अपनी हिन्दी साहित्य की उत्तर-पुस्तिका में लिखेंगे एवं याद करेंगे।

धन्यवाद!

Last page.

Scanned with CamScanner